पांच चिझो को पांच चिझो से पहले गनीमत समझो

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

जवानी कर फिदा उस पर के जीसने दी जवानी को यह एक नसीहत है जो रसूलुल्लाहﷺ ने फरमायी के पांच चिझो को पांच चिझो से पहले गनीमत समझो.

पहली बात जो इरशाद फरमायी अपनी जवानी को बुढापे से पहले गनीमत समझो जवानी ये जिंदगी का वह बेहतरीन जमाना है जीस मे अल्लाह की तरफ से दि गई सारी सलाहियतें पुरे उरूज पर होती है यानी उस मे अल्लाह ने इंसान को जो कुछ अता फरमाया है वह आला दरजे पर होता है और अगर आदमी अपनी सलाहियतों को अल्लाह की इतात और फरमाबरदारी मे इस्तेमाल करले तो अल्लाह इस्से बहुत राजी और खुस होते है, रसूलुल्लाहﷺ का इरशाद है ऐसे ७ आदमी है जीन को अल्लाह अपने साये

मे उस दिन जगह अता फरमायेगे जब अल्लाह के साये के अलावा और कोई साया नहीं होगा. चुके इस जवानी मे आदमी की ख्वाहिशत भी उरूज पर होती है और वो उसको इस बात पर उभरती है के मे अपनी ख्वाहिशात को पूरी करू येह मौका है उसके बाद येह मौका मिलने वाला नहीं है इसलिये जवानी के जमाने को गनीमत समझने की रसूलुल्लाह ﷺ ने ताकीद फरमायी है.

दूसरी बात जो इरशाद फरमायी के अपनी तंदुरस्ती को बीमारी से पहले गनीमत समझो तंदुरस्ती भी अल्लाह की वो नेमत हे जो आदमी के हाथ से जब छीन जाती हे तो दुबारा लाना उसके इख्तियार मे नहीं होता वो कब छीन जाये उसके मुताल्लिक कोई दावा भी नही कर सकता जैसे मौत का हाल है के कब आ जाये इसी तरह बीमारी भी किसी भी वकत आ सकती है इस लिये अल्लाह कि दी हुए इस तंदुरस्ती को आदमी गनीमत समझकर उससे ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाले अल्लाह की इतात और

फरमाबरदारी का ज्यादा से ज्यादा एहतेमाम करे.

तीसरी बात जो इरशाद फरमायी अल्लाह ने जो मालदारी दि हे तो फकीरी से पहले उसको गनीमत समझो उस माल को अल्लाह की इतात व फरमाबरदारी मे इस्तेमाल करके अल्लाह की खुशनूदी हासिल करे और फुजूलखर्ची से बचे यह इसके लिये बरी सादत और नेक बख्ती की बात है.

चौथी बात जो इरशाद फरमायी अपनी फुर्शत को मशगुली से पहले गनीमत समझो आदमी को जो वकत मिलता है वो भी बडा गनीमत है जब आदमी मसगुल हो जाता है और उसकी मसरूफियत बड जाती है तो वो तमन्ना करता है के खास मुझे वकत मिलता तो फला काम कर लेता और फुर्सत का जमाना जो गुजरा उससे फायदा नहीं उठाया.

पांचवी बात जो इरशाद फरमायी जीन्दगी जेसी भी है उसको मौत से पहले गनीमत समझो एक आदमी है किसी काम का नहीं, उसके हाथ भी काम नहीं करते, पाव भी जवाब दे

गया है, हरकत भी नहीं कर सकता, बिस्तर पर पडा हुवा है, लेकिन जबान तो है उसकी उस जबान से अल्लाह का नाम तो ले सकता है मौत के बाद उसको यह मौका नहीं मिलेगा.

अल्लाहवालो का ये हाल रहा है के वह हर वकत अल्लाह की याद मे मशगूल रहा करते थे, हजरत मारूफ कारखी (रह) एक बहुत बडे बुजरूग गुजरे है हजरत जुनेद बगदादी (रह) के दादा पीर उनके शेख के शेख थे, वो हर वकत अल्लाह की याद मे मशगूल रहते थे एक मर्तबा हजामत बनवा रहे थे नाइ ने कहा आप होठ जो हिला रहे हो उसकी वजह से मुझे बाल लेने मे दुशवारी हो रही है उनको जरा थोडी देर के लिये बंद रखे ताके मे आप की मूछ काटलु तो जवाब मे फरमाने लगे के वाह भाई तुम अपना काम करो और मे अपना काम ना करू यह कैसे हो सकता है.

हकीकत ये है के अल्लाह ने हम को मोका दिया है तो हम अपने वकत से फायदा उठाये और हमारी कोई घडी अल्लाह के जीकर से खाली नहीं गुजारनी चाहिये हदीस मे

आता है के लोग जब जन्नत मे चले जायेगे तो जन्नत मे चले जाने के बाद उनको दुनिया मे जो वकत अल्लाह की याद के बगैर गुजरा था उस पर अफसोस होगा के काश उस वकत मे अल्लाह को याद कर लेते जन्नत मे पोहच जाने के बाद कोई चीज बाकि नहीं रही सब कुछ मिल चूका है लेकिन जीन्दगी के वो लम्हे वो वकत जो गफलत मे गुजरे उनके मुताल्लिक नदामत और पछतायेगा के काश उस वकत को अल्लाह की याद मे इस्तेमाल किया होता.

अल्लाह हम सबको इन चिझो पेर अमल करने कि तोफीक अता फरमाये. आमीन.